पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

**अन्तरा शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था

www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

# ‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

## (लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-

**डॉ. राधा दुबे**

आयोजक:-

**अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन**

वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

# अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

**कलम की शक्ति, समाज की दिशा**

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

## वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

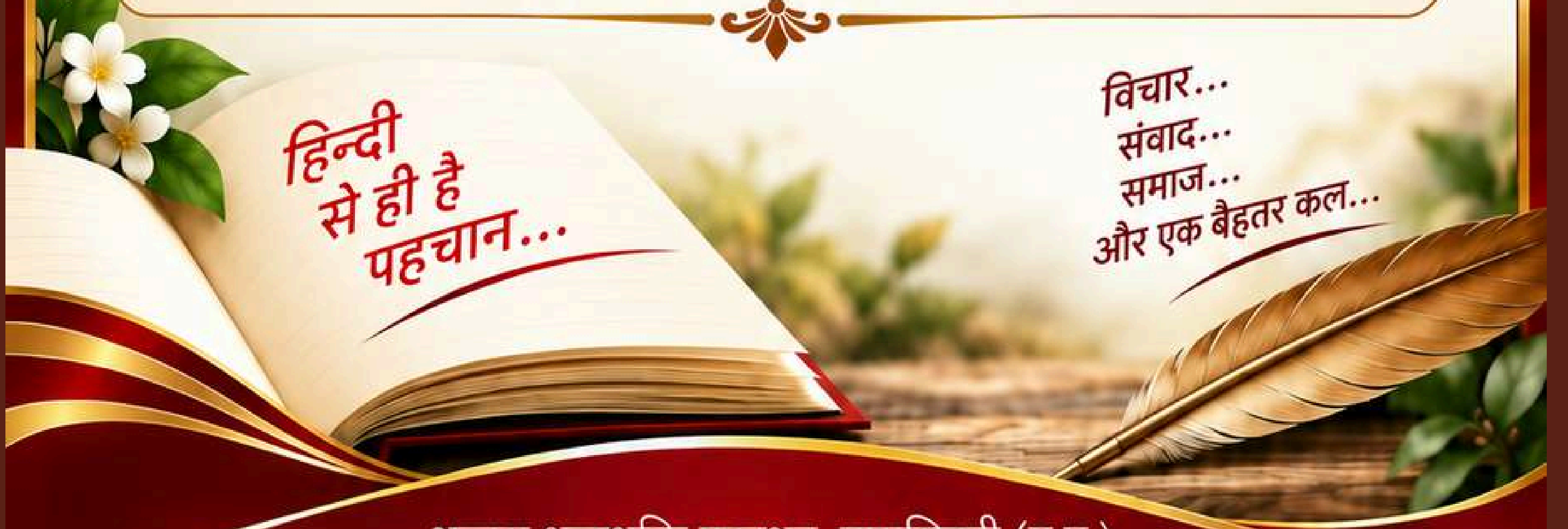

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

# लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - डॉ. राधा दुबे

# वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का हनन

# वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का हनन

## ------ सारांश ------

आज विश्व के समक्ष कई विकराल समस्याएँ खड़ी हैं ऐसा लगता है यह संपूर्ण समाज को निगल जाएँगी। इस प्रकार इन नित नवीन समस्याओं का उत्पन्न होना इस बात का संकेत है कि मानव भौतिकतावादी व वैश्वीकरण की अंधी दौड़ में नैतिकता को भूल गया है, यह महामारियाँ कहीं न कहीं इस ओर संकेत करती हैं कि मानव अपने पथ से भटक कर एक ऐसे वातावरण की ओर अग्रसर हो रहा है जहाँ मानव को एक चमत्कारी संसार तो मिलता है किन्तु मानव का जीवन संकट में पड़ रहा है। आज विकसित देशों और महानगरों की स्थिति बहुत गंभीर है। अपने नैतिक मूल्यों को न पहचानना मानव की सबसे बड़ी भूल है यदि सार्थक जीवन जीना है तो मानव को अपने नैतिक मूल्यों की ओर लौटना होगा नैतिकता का मूल भारत की ज्ञान परंपरा में, उसकी धार्मिक व दार्शनिक सोच में है। अनादि काल से विभिन्न धार्मिक आस्थाएँ यहाँ पनपी हैं। भारत की प्रत्येक धार्मिक और दार्शनिक प्रणाली में एक प्रमुख नैतिक घटक है। नैतिकता इन सभी प्रणालियों का मूल है। प्रत्येक धार्मिक परंपरा में सुखी और संतुष्ट जीवन के लिए अच्छा नैतिक आचरण आवश्यक माना जाता है। धार्मिकता के मार्ग पर चले बिना कोई भी व्यक्ति जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता इसके लिए व्यक्ति को अच्छे कर्म करने होंगे और गलत कर्म से बचना होगा और इसके लिए जरूरी है कि वह अपनी परंपरा को बचाए रखें।

''हमारी परंपरा में बराबर यह कोशिश भी रहती है कि हम ऐसे आधारों और सिद्धांतों को खोजें जो सभी कलाओं पर लागू हों, सभी को समझने में हमारी सहायता करें। भारतीय परंपरा में वरीयता यद्यपि सदैव 'वाक्' को ही दी गई, तथापि लगातार रूप-सौष्ठव के ऐसे नियमों की खोज होती रही जो दूसरी कलाओं पर भी लागू हों।''

# ------ भूमिका ------

विश्व में फैली दूषित मानसिकता किस बात का संकेत है? आज धर्म अर्धम से, ज्ञान अज्ञान से, न्याय अन्याय से, शान्ति अशान्ति से, राजकता अराजकता से क्यों पराजित होते दिखाई दे रहे हैं? सूक्ष्म विवेचन और निरीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि समाज में मूल्य बोध का पलड़ा उत्तरोत्तर हल्का होता जा रहा है। व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। मानव जीवन में नैतिक मूल्यों की उपादेयता उतनी ही है जितनी कि नौका में पतवार की। जिस तरह पतवार विहीन नौका की दशा और दिशा अनिश्चित होती है ठीक उसी तरह नैतिक मूल्यों से विहीन व्यक्ति अपने जीवन व समाज को अपेक्षित गंतव्य तक पहुँचाने में सफल एवं सक्षम नहीं हो सकता।

अतः भारत सहित संपूर्ण विश्व के समस्त कष्टों का कारण यह है कि मानव का संबंध नैतिक मूल्यों की प्राप्ति से न होकर केवल मष्तिष्क के विकास से रह गया है। आज के ज्ञान-विज्ञान ने हमारी मानसिकता को ही दूषित कर दिया है। इस दूषित मानसिकता से प्रभावित हम आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का सदुपयोग मानवीय मूल्यों के संबर्धन में कैसे कर सकते हैं? यह बहुत ही महत्वपूर्ण बिन्दु है। प्रत्येक व्यक्ति को बड़ी गंभीरता पूर्वक इस पर विचार व मंथन करना चाहिए।

# ------ मूल आलेख ------

नैतिकता मुख्य रूप से दुनिया के नैतिक मुद्दों से संबंधित है। नैतिकता का तात्पर्य समाज द्वारा निर्धारित कुछ सिद्धांतों और आचार संहिता के दायरे में रहने वाले जीवन से है। नैतिकता सबसे बुनियादी तत्वों में से एक है जो अच्छे और बुरे के बीच की रेखा का सीमांकन करती है। नैतिकता का तत्व वह है जो मानव समाज को बुराइयों से अलग करता है और अच्छाइयों की ओर अग्रसर करता है ताकि मानव जीवन सार्थक बन सके।

नैतिकता दो प्रकार की होती है, व्यक्तिगत और सामाजिक। व्यक्तिगत नैतिकता अच्छे गुणों का सूचक है जो व्यक्तिगत भलाई और खुशी के लिए आवश्यक हैं। सामाजिक नैतिकता और उन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है जो सामाजिक व्यवस्था और सद्भाव के लिए आवश्यक हैं। किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा बुरा या सही गलत की परख की जाती है इंसान के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका अपना घर परिवार ही होता है और घर परिवार समाज का एक अंग है, जहाँ उसे शिक्षा प्राप्त होती है, घर परिवार के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है।

''वास्तव में घर एक पाठशाला है जहाँ हम प्यार और त्याग का पहला पाठ पढ़ते हैं। अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी जीना है, यह शिक्षा हमें वहीं से प्राप्त होती है। यदि घर संस्कारी हो तो आदमी घर की दुनिया में जीता हुआ भी बहुत सहज भाव से उससे बाहर निकलना शुरु करता है और एक बृहत्तर समाज का अंग बनता चला जाता है। उसका घर व्यापक होता चला जाता है। क्रमशः घर से गाँव, गांव से शहर, शहर से जिला, जिला से प्रदेश, प्रदेश से देश, उसका घर कहलाने लगता है।''2

''यह सच है कि कई लोग घर छोड़कर यशस्वी बने लेकिन घर में रहकर यशस्वी या महान बने रहने वालों की संख्या बहुत अधिक है और सच बात तो यह है कि गृहस्थ ही सारे मूल्यों, सारे धर्मों और बड़प्पन का आधार स्तंभ है।''3

प्राचीनकाल के भारत में पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ मूल्य आधारित शिक्षा भी जरूरी होती थी लेकिन समय के साथ नैतिक शिक्षा का महत्व कम होता चला गया और आज वैश्वीकरण और भौतिकतावाद के कारण इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा की भागीदारी लगातार घटती जा रही है। ''मूल्य-चेतना विकसित करना अब आज की तारीख में न तो हमारे परिवारों का सरोकार रह गया है, न स्कूल-कॉलेजों का। मैंने खुद अपने कॉलेज के सर्वाधिक उद्दंड और दुःशील कई छात्रों को राजनीति में घुसपैठ कर रातों-रात मनमानी कामयाबी हासिल करते देखा है।''4

व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आकलन उसके नैतिक मूल्यों से किया जाता है। नैतिक मूल्य सफलता के लिए जरूरी हैं। नैतिक मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। वैदिक काल से होते हुए, गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी तक अनेक महापुरुष नैतिक मूल्यों के कारण इतिहास में अमर हो गए। नैतिक संहिता और महापुरुषों के अनुसार लोगों को अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना आवश्यक है।

''जिधर देखो - अधिकारों की ही बात होती है; कर्तव्यों की भूल कर भी कभी नहीं। न ही हमारी शिक्षा में, शिक्षा संस्थानों में इसके लिए कोई गुंजाइश रहने दी गई है। कैसी भयानक, आत्महंता चूक और सरासर अंधापन है यह? गांधी जी ने जोर देकर एक बार नहीं, कई-कई बार, कई-कई जगह इस बात को रेखांकित किया था। उन्होंने कहा था कि ''अहिंसा पर आधारित स्वराज्य में लोगों को अपने अधिकारों के बारे में जानने की उतनी जरूरत नहीं है, जितनी अपने बुनियादी कर्तव्य जानने की।''[5]

''अपनी शहादत से केवल 3 माह पूर्व गांधी ने जूलियन हक्सले को लिखी चिट्ठी में कहा था- ''सारे उचित और सदुउपार्जित अधिकार किस तरह कर्तव्यपालन से ही उपजते हैं, यह सबक मैंने बचपन में ही अपनी अनपढ़, लेकिन बुद्धिमती माँ से ही सीखा था।''

भारतीय जीवन मूल्य दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। इस तथ्य के कारण भारत में नैतिक शास्त्रों का एक विशाल भंडार है, जिसने युगों से हमारी सभ्यता का मार्गदर्शन किया। भारतीय नैतिकता की नींव समाज की पूजा, प्रार्थना, आदर्शों और सिद्धांतों के रूप में आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं में देखी जा सकती हैं। भारत में नैतिकता और धर्म के बीच गहरे संबंध हैं। नैतिक नियम लोगों के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के तरीकों का एक संकेतक है। भारत की आध्यात्मिकता में ही भारतीय संस्कृति और भारतीय मूल्यों का निवास है यही भारतीयता है, इसलिए ही भारतीय संस्कृति एकमात्र आध्यात्मिक, अति मानसिक-अति बौद्धिक संस्कृति है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण का विधान करता हुआ सृष्टि की रक्षा और संहार करता है उसी प्रकार भारतीय संस्कृति भी सदा सद्गुणों की सृष्टि, उनका संरक्षण एवं कल्याण विरोधी दुष्ट तत्वों के विनाश की व्यवस्था करती है। वस्तुतः यह मानवीय, विश्वव्यापी एवं सर्वलोक हितकारिणी संस्कृति है। जो इसका अपनी अज्ञानता के कारण विरोध करता है उन्हें हार्वड विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर माइकेल सांडेल की बातचीत पर ध्यान देना चाहिए।

"एनलाइटनमेंट युग के कई दार्शनिक यह मानकर चलते रहे की जन समाज पर धर्म का प्रभाव क्षीण होता जाए यह अवश्यंभावी है और अंततः उसका पूरा लोप भी। मगर दिलचस्प तथ्य यह है की वैसा हुआ नहीं। काण्ट और एडम स्मिथ (जो था तो मार्केट सोसाइटी का दार्शनिक; किंतु अर्थशास्त्र को नैतिक दर्शन की शाखा मानता था) के बाद जो तीसरा तगड़ा प्रभाव था, वह उन धार्मिक परंपराओं का था जो हमारे सोच-विचार को शक्ल देते रहे और स्वयं 'एनलाइटनमेंट'के उत्तराधिकारी बौद्धिक भी उनसे भीतर ही भीतर आक्रांत रहे आए।

सांदेल इसी में आगे यह भी जोड़ते है कि ''यह बहुत बड़ी भूल थी-उन ज्ञानोदय योग के अग्रगामिओं की-यह मानकर चलना कि विज्ञान मनुष्य की आध्यात्मिक अभीप्सा को-आत्म-ज्ञान की भूख को विस्थापित कर देगा! मनुष्य सार्थक जीवन कैसे जी सकता है-यह ऐसा बुनियादी सवाल है जिसका संतोषजनक उत्तर कोई भी विज्ञान, कोई भी कैसा भी अर्थशास्त्र कभी नहीं दे सकता। आध्यात्मिक परंपराएँ इस दृष्टि से आज भी निर्धारक महत्व अक्षुण्ण रखे हुए हैं। आज के फलसफे को इसे ध्यान में रखना ही पड़ेगा। इस तथ्य का यथावत् सामना करते हुए ही वह अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकता है; अन्यथा नहीं।''[7]

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में उसका मार्गदर्शन करने के लिए कुछ नैतिक दिशा-निर्देशों की आवश्यकता होती है। यह नैतिक दिशा निर्देश विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होते हैं। भारत में नैतिकता का एक मुख्य स्रोत प्राचीन धर्म ग्रंथों में पाया जाता है, आमतौर पर वेद और स्मृतियों को नैतिकता के स्रोत के रूप में माना जाता है। भारतीय संस्कृति हमारी मानव जाति के विकास का उच्चतम स्तर कही जा सकती है। इसी की परिधि में सारे विश्व राष्ट्र के विकास के 'वसुधैव कुटुंबकम' ् के सारे सूत्र आ जाते हैं। हमारी संस्कृति में जन्म के पूर्व से मृत्यु के पश्चात् तक मानवीय चेतना को संस्कारित करने का क्रम निर्धारित है। मनुष्य में पशुता के संस्कार उभर न पाए, यह इसका एक महत्वपूर्ण दायित्व है।

"मानवीय चेतना का यह स्वभाव है कि वह केवल छाप को ग्रहण नहीं करती। वह प्रत्येक अनुभव को किसी तारतम्य में रखती-जोड़ती चलती है। जब-जब ऐसी किसी संरचना की पहचान हमें होती है, तब-तब उसका एक छंद हमें मिलता है।"[8]

मनु ने कुछ मूल्यों को सार्वभौमिक माना है संतोष , क्षमा, आत्म-नियंत्रण, चोरी ना करना, स्वच्छता, ज्ञान, सत्यता, क्रोध और घृणा इन गुणों को समाज के लिए नैतिक आदेश कहा जाता है। गीता हमें फल, परिणामों के बिना किसी लगाव, विचार के कर्म का मार्ग सिखाती है। यह ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने का एक साधन है। इस प्रकार गीता कर्म योग और ज्ञान योग की वकालत करती है। हालांकि इसमें कर्म योग को ज्ञान योग से ऊपर बताया गया है। महाकाव्य और दार्शनिक ग्रंथों में नैतिक मूल्यों का महत्व उजागर किया गया है जैसे- उपनिषद, रामायण, दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र। मनुष्य के सामने दैनिक जीवन में आने वाली सार्वभौमिक नैतिक समस्याओं को दार्शनिक संदर्भ में रखा गया है। धर्मशास्त्रों में सामाजिक नैतिकता पर जोर दिया गया है। इन ग्रंथों में व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को मार्गदर्शन के लिए नैतिक ढाँचा का खाका खींचा गया है। इन ग्रंथों में नैतिक समस्याओं पर परोक्ष रूप से चर्चा की गई है इसी प्रकार वर्तमान में डायरियों द्वारा नैतिक मूल्यों को समझा जा सकता है डायरीकारों ने स्वार्थ से परे होकर, निःसंकोच मानव हित में सजीव घटनाओं द्वारा नैतिक मूल्यों की शिक्षा पाठकों को दी है। उन्होंने अपने अनुभव साझा किए हैं, जो आज के समय में प्रासंगिक है।

"आप सही कहते हैं अंकल जी, लेकिन इसी अंधकार में कहीं-कहीं प्रकाश भी दिखाई पड़ जाता है। तुम ठीक कहते हो। में तो साहित्यकार हूँ और महसूस करता हूँ कि अखबार जो दिखा रहे हैं वही पूरा सच नहीं है। जो दिखा रहे हैं उससे अलग भी एक सच है- मूल्य का सच और साहित्यकार उसी सच को गली कूचों में, आम आदमियों के बीच खोजता-फिरता है और अपने साहित्य में उसे उजागर करता है। फिर भी रोज-रोज अखबार पढ़कर मन खट्टा तो हो ही जाता है। लगता है कि कहीं भी, कोई भी छल-कपट कर सकता है। फिर भी जीने के लिए विश्वास का सहारा तो चाहिए ही और उसे अपने मन में जलाए रखना चाहिए।"

मानव जीवन का सच्चा सार सांसारिक आनंद और दुखों के बीच जीना है। सच्चा धर्म नैतिक गुणों पर जोर देता है। नैतिकता और मूल्य इस बात को महत्व देते हैं कि जीवित रहने या करने के लिए उससे अच्छा क्या है नैतिक शिक्षा में स्वयं का आत्मनिरीक्षण और बीते हुए कल की समीक्षा विशेष रूप से की जाती है। लोगों का आंतरिक विवेक भी नैतिकता का स्रोत बन जाता है।

"बहुत अच्छी बनी है फिल्म। अपने ही बलबूते पर, अपने ही अध्यवसाय और चारित्रिक सामर्थ्य से धोनी सफलता के शिखर पर पहुँचा। यही-ऐसा ही आदर्श आज की युवा पीढ़ी को अपने सामने रखना होगा। अन्यथा सारा जो वातावरण है आज का, बहुत ही संस्कारहीन आपाधापी और राग-द्वेष का है।"

नैतिक दृष्टिकोण में किसी भी आयाम में आगे के विकास के लिए बहुत जरूरी है, सार्वभौमिक संस्कृति का विकास। विकास प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति और जीविका के विशेष संदर्भ में नैतिक मूल्यों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। भारतीय जीवनशैली, दर्शन और नैतिक मूल्यों के पोषण के लिए रामायण, भागवत, महाकाव्य और उपनिषदों जैसे साहित्य के विभिन्न रूपों में बहुत गंभीरता से व्याख्यायित है। साहित्य के माध्यम से निरंतर पुनर्जागरण की क्रिया नैतिक मूल्यों के पुर्नस्थापन में सहायक हुई है। संसार के सभी महापुरुष या सफल व्यक्ति अपने ऊंचे आदर्शों और मान्यताओं के कारण ही समाज में गाथा बन कर अपना नाम रोशन करते हैं। समाज सर्वदा ऐसे लोगों का अनुकरण करता है। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कुछ मूल्य निर्धारित करने पड़ते हैं। व्यक्ति जानकारी प्राप्त करना चाहता है कि सफल व्यक्ति इतना सफल कैसे हैं। इसी कड़ी में रामदरश मिश्र अपने जीवन के अनुभव बताते हैं-

''मैं समझता हूं कि स्वास्थ्य को बनाए रखने में मन की भूमिका अहम होती है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक सोच के साथ शरीर को निरोग रखने के लिए नियमित रूप से 1 घंटे की अवधि में प्रातः काल टहलना, कुछ व्यायाम एवं योगासन करना नितांत आवश्यक है। यदि इस 1 घंटे की अवधि में प्रातः काल हम पसीना बहाते रहे तो शेष 23 घंटे तक हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। समय से सोना एवं समय से उठना व्यक्ति को अपनी दिन-चर्या का प्रमुख अंग बनाना चाहिए। जीवन संघर्ष में सफलता पाने के लिए श्रम और सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए। मैंने जीवन में स्पर्धा या ईर्ष्या में किसी जैसा बन जाने या उसे पछाड़ देने का ताप कभी नहीं पाला।

**पहाड़ों की कोई चुनौती नहीं थी**
**उठाया गया यों ही सर धीरे-धीरे।"**

नैतिकता व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार के क्षेत्र में नैतिक मुद्दों का अध्ययन है। नैतिकता पर आधारित मानवीय मूल्य सभी मनुष्यों को समान अधिकार देकर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच स्वस्थ विकास और सकारात्मक जीवन में योगदान करते हैं। हम अपने देश काल के अनुसार समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बने और अपने जीवन मूल्यों को पहचान कर उनके अनुसार अपना जीवन जिए यही हमारी सार्थकता है। इसके लिए हमें मूल्य आधारित जीवन जीने के मार्ग का चयन करना पड़ेगा। निःसंदेह मूल्यों का निर्धारण करने में हमारे लिए प्रारंभ में कठिनाइयां आएगी जिससे हमें जूझना पड़ेगा। जीवन मूल्य सहज निर्धारित नहीं होते इसके लिए त्याग और सत्य के तत्व जरूरी है।

''जीवन का रास्ता सीधा नहीं है। इसमें तमाम ऊबड़ खाबड़ पगडंडियाँ है। सब से होकर गुजरना पड़ता है और जीवन का अर्थ सबसे संश्लिष्ट एवं व्यापक है। उसमें सुख के, सफलता के, उन्नति के रास्ते बंधे-बंधाये या तय नहीं होते। एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा सफलता की नयी दिशा की ओर इशारा करता है। बस उसे पहचानने की आवश्यकता होती है। जो लोग एक रास्ते पर चलते हुए एक विशेष प्रकार की भौतिक सफलता को ही जीवन का लक्ष्य मान लेते हैं वह जीवन को बहुत कम समझते हैं। वह जीवन की बहुआयामी छवियों और सुखों से वंचित रह जाते हैं और अपनी सफलता से वंचित होने पर जीवन त्याग देते हैं।''

''छोटे-छोटे सुख चारों ओर बिखरे हुए हैं। यदि हम उन्हें सहेजते चलें तो हम स्वयं उनकी ज्योति से जगमगा उठेंगे। मैं स्पीड पोस्ट करके आने को मुड़ी तो देखा दोनों पांवों से आहत एक व्यक्ति सीढ़ी चढ़कर ऊपर आना चाहता है। मैंने एक युवक से कहा कि चढ़ने में जरा इनकी मदद कर दो। यह सुनते ही उस विकलांग ने दोनों हाथ जोड़ दिए। मैं समझ गई कि वह यह स्वाभिमानी व्यक्ति है। इस हाल में भी अपने बूते पर जीना चाहता है। नहीं चाहता कि कोई भी आदमी सहायता करके उसे उसकी विकलांगता का बोध कराए। कितना अच्छा लगता है ना स्वाभिमान का सौंदर्य।''[13]

नैतिक मूल्य मानव जीवन को सही दिशा और उद्देश्य देते हैं। विश्व के बहुत से देशों की संस्कृति में दोष समा गए हैं और इन्ही दोषों के कारण आज मानव जीवन पर एक अदृश्य संकट मंडरा रहा है और दिन प्रतिदिन यह स्थिति और विकराल होती जा रही है।

## ----- निष्कर्ष -----

नैतिक मूल्यों का हम प्रत्यक्ष रूप से हनन् होते देख रहे हैं। इसका कारण क्या है? क्या हमारी जड़े ही कमजोर थी? या हमारी सामाजिक व्यवस्था का भार जिनके कंधों पर आया वह इसे सहन करने में असमर्थ थे, या वह दायित्व निभाने में सक्षम नहीं थे, या कुछ दुष्ट प्रवृत्तियों ने शनैः-शनैः अपना जाल बिछा कर ऐसा आकर्षण फैलाया की सभी मोहित हो गए और नैतिकता से दूर होते गए। कारण जो भी हो आज की स्थिति बहुत चिंतनीय है, आज की पीढ़ी को जागरुक करना होगा, विषम परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना होगा तभी समाज परिपक्व होकर सही मार्ग का चुनाव कर सकेगा। वर्तमान में उचित अनुचित की क्षमता खो रही है युवा पीढ़ी उसमें विवेक बुद्धि को विकसित करना होगा। संस्कारी व चरित्रवान व्यक्ति ही भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त कर सकता है इस बात का आत्मबोध प्रत्येक मानव को कराना होगा।

## ----- संदर्भ ग्रंथ -----


1. रमेशचन्द्र शाह, कठिन समय में, प्रथम संस्करण, किताबघर प्रकाशन-2018, पृ.सं.-118
2. रामदरश मिश्र, विश्वास जिन्दा है, प्रथम संस्करण, अमन प्रकाशन-2017, पृष्ठ संख्या-41
3. वही, पृष्ठ संख्या-40
4. रमेशचन्द्र शाह, कठिन समय में, प्रथम संस्करण, किताबघर प्रकाशन-2018, पृ.सं.-48
5. वही, पृष्ठ संख्या-47
6. वही, पृष्ठ संख्या-48
7. वही, पृष्ठ संख्या-48-49
8. वही, पृष्ठ संख्या-118
9. रामदरश मिश्र, विश्वास जिन्दा है, प्रथम संस्करण, अमन प्रकाशन-2017, पृष्ठ संख्या-98
10. रमेशचन्द्र शाह, कठिन समय में, प्रथम संस्करण, किताबघर प्रकाशन-2018, पृ.सं.-136
11. रामदरश मिश्र, आस-पास, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन-2010, पृष्ठ संख्या-48
12. वही, पृष्ठ संख्या-49
13. रामदरश मिश्र, विश्वास जिन्दा है, प्रथम संस्करण, अमन प्रकाशन-2017, पृ.सं.-168

# लेखक परिचय

**नाम** – डॉ. राधा दुबे

शिक्षा - पी-एच. डी.

बैचलर ऑफ जर्नलिज्म एण्ड कम्युनिकेशन

एम. ए. (हिंदी एवं राजनीति शास्त्र)

स्थान - जबलपुर, मध्यप्रदेश

संप्रति - साहित्यकार, पत्रकार एवं समाजसेवी

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

# अन्तरा शब्दशक्ति
## प्रकाशन

**कलम की शक्ति, समाज की दिशा**

# सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ..........................**डॉ. राधा दुबे**..................जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

**अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन**
**एवं संस्था**
**डॉ. प्रीति समकित सुराना**

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...